स्वामी श्री बज्रानन्द जी महाराज

श्री परमहंस आश्रम शिवपुरी, (MP) भारत

हम सबको मिलकर एक ऐसा मार्ग निश्चित करना है जिससे हमारा जीवन हमारी उपलब्धि तथा हमारा भविष्य भली प्रकार सुरक्षित हो सके तथा धन, समय एवं जीवन को सार्थक बनाया जा सके। सम्पूर्ण विश्व को प्रत्येक क्षेत्र में खोज की दिशा भारत ने दी लेकिन षडयन्त्र पूर्वक भारतीय इतिहास को विकृत करने का उपक्रम लगभग 1000 वर्षों से किया जाता रहा। 150 सालों से पुस्तकों के माध्यम से पढ़ाया जाने लगा कि मनुष्य का विकास बन्दर से हुआ लेकिन आज किसी पशु पक्षी में इस प्रकार का परिवर्तन होते नहीं दिखाई देता है और न ही विस्फोट से यह ग्रह उपग्रह अलग हुए कोई भी विस्फोटक वस्तु गोलाकार में टूटकर अपने निर्धारित बिन्दु(कक्ष) में स्थित नही हो सकती। जिसमें विस्फोट हो वो भी गोल और जो टुकड़े निकले वो भी गोल क्या ऐसा करके कोई आज दिखा सकता है। एक समय था कि पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति एक श्रेष्ठ संस्कृति के रूप में प्रचलित थी आज भी खुदाई में इसके प्रमाण मिलते हैं, इसके अतिरिक्त खुदाई में किसी भी संस्कृति का प्रमाण नहीं मिलता।

जिस देश की संस्कृति पूरे विश्व में फैली थी पहले उसका नाम अजनाभ वर्ष था (ब्रह्मा की नाभि से उत्पन्न) बाद में जम्बूदीप फिर आर्यावृत और राजा दुष्यन्त्र के पुत्र भरत के नाम से भारत वर्ष पड़ा। बाहरी लोगों के आने के बाद उनके उच्चारण की वजह से सिन्धु नदी के इस पार के लोगों को वो हिन्दू कहते थे। आज भी सिन्ध नदी को हिन्द नदी बोलते हैं और शेर सिंह को हेर हिंह कहते हैं तो सिन्धु के इस पार बालों को वो हिन्दू कहने लगे और आर्यवृत को हिन्दुस्तान के नाम से पुकारने लगे।

आज मनुष्य में चारों ओर भय का वातावरण विद्यमान है। हर आदमी भयवीत है, जब प्राचीन ऋषियों ने देखा कि मनुष्य बाहर कुछ न कुछ खोज रहा है और जब असफल होता है तो उसे दुख होता है और अंत में जो भी मिलता है वो भी नष्ट हो जाता है और परिणाम में दुख देता है।

बुद्धिजीवी वर्ग विचार करे कि करोड़ो वर्ष पहले हमारे पूर्वजों के पास कोई टिकाऊ चीज नहीं थी। 21वीं सदी में भी ने अविष्कार के बाद हमारे पास कोई टिकाऊ चीज नहीं है। इतनी बड़ी खोज के बाद भी हम सबके जीवन में अशांति असुरक्षा एवं भय का वातावरण विद्यमान है तथा सबकुछ नष्ट होने वाला है। इ तनी मेहनत से अर्जित उपलब्धि नष्ट होकर एक दिन मनुष्य के दुख का कारण बनती है। परिणाम की दृष्टि से एक करोड वर्ष पहले हमारे

पूर्वज जहॉ खड़े थे इतने अविष्कार के बाद भी आज हम सब वहीं खड़े हैं तो इस अविष्कार का लाभ क्या इसी प्रकार प्रत्येक सम्मलनों में अरबों रूपये खर्च करने के बाद अपनी–अपनी परम्पराओं में सिमटे मिलते हैं, जहां दुःख एवं समस्याओं के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। हम सब के पास एक दूसरे को देने के लिए दुख और आंसू के सिवाय कुछ भी नही है। आज भी हमारा जीवन दुख चिंताओं और समस्याओं से घिरा हुआ है। क्या दुख चिंता और समस्याओं के मार्ग पर चलने वाला तथा चलाने वाला मानव जाति का हितैषी एवं शुभ चिंतक हो सकता है ?

बन सकता है ? या कहा जा सकता है ?

इसी मार्ग पर चलकर हमारे पास 40वीं सदी में भी दुख और आंसू के सिवा कुछ नहीं होगा। करोणों वर्ष पहले भी मनुष्य का जीवन दुख चिंताओं और समस्याओं से घिरा रहता था आज भी दुख चिंताओं और समस्याओं से घिरा है। इस आधुनिका खोज का परिणाम और लाभ क्या निकला आज भी मनुष्य के चारों ओर भय एवं असुरक्षा का वातावरण व्याप्त है।

दुनिया की कोई ताकत कोई उपलब्धि सुख शांति नही दे सकती जबकि प्रत्येक व्यक्ति का उद्देश्य सुख और शांति प्राप्त करना है। प्रत्येक व्यक्ति समृद्धि सफलता एवं लाभ प्राप्त करना चाहता है। लेकिन जीवन भर

बौद्धिक स्तर से परिश्रम करते हुए मनुष्य जो कुछ प्राप्त करता है। जिस लाभ पर वह प्रसन्नता जाहिर करता है क्या उसके नष्ट होने पर उसे दुख नही होगा ? युद्ध के क्षेत्र में, पढ़ाई के क्षेत्र में, खोज के क्षेत्र में स फलता प्राप्त करके उससे मिलने वाली वस्तु क्या टिकाऊ है ?

जबकि सफलता मिलने पर मनुष्य को प्रसन्नता मिलती है लेकिन यह सफलता परिणाम काल में मनुष्य के दुख का कारण बनती है। संसार में जो कुछ दिखाई देता है वह सब नष्ट होने वाला है। इसलिए उसकी प्राप्ति में प्रेरणा करके उस मार्ग में प्रेरित करने वाले लोग मानव जाति के हितैषी अथवा शुभ चिंतक नहीं बन सकते है।

जब सर्वश्रेष्ठ बुद्धिजीवियों ने संसार (भौतिकवाद) के परिणाम पर विचार किया तो पाया कि सवोपरि विद्वान, सर्वोपरि पद वाला एवं सर्वोपरि धनवान एवं शक्शिाली व्यक्ति भी दुख एवं असफलता का जीवन जीने के लिये विवश है। दुनियां का कोई भी व्यक्ति इस बाहरी उपलब्धि से अपने जीवन को अपमानित होने से, दुख दुर्दशा एवं तवाही से नहीं बचा सकता, सोचा हुआ जीवन नहीं प्राप्त कर सकता और नअपनी आत्मा को नर्क में जाने से बचा सकता है।

भारतीय ऋषियों द्वारा करोडो साल पूर्व कही हुई बात आज

भी यथावत है। 470 टन सोना अर्जित करने वाला गद्दाफी तथा 40 वर्षों तक एक छत्र राज्य करने की क्षमता रखने वाला अपने जीवन को दुख दुर्दशा एवं तवाही से नहीं बचा सका। धन और पद उसके जीवन को अपमानित होने से नहीं बचा सके जबकि आज की शिक्षा सबको धन और पद के लिये प्रेरित करती है। धन, पद और सम्मान पाने के लिए मनुष्य आज किसी भी स्तर तक उतर जाता है इस अंधी दौड में भाग लेने वालों ने क्या कभी इसके परिणाम पर विचार किया है ? इसके परिणाम पर विचार करके ही आदि योगी शिव ने परमतत्व परमात्मा को खोजा। इसके बाद पूरे संसार ने उस सत्य को स्वीकार किया। करीव 2000 वर्ष से समाज में अधिक विकृति आ गयी है इससे पहले इतनी नहीं थी और अव विकृतियां बडती ही जा रही हैं सही मन से कभी अपराध नहीं होता के वल विकृत मन से ही अपराध होता है। और मन की विकृतता दुर्व्यवस्था से बढ़ती है। वर्तमान में घटने वाली घटनाऐं ऋषियों के कथन की आज भी पुष्टि करती हैं उन्होने कहा कि तुम कुछ भी बन जाओ कुछ भी प्राप्त कर लो लेकिन जब तक ईश्वर को नहीं प्राप्त कर लोगे तब तक दुखो से समस्याओं से जन्म से मृत्यु से छुटकारा नहीं पाओगे। और आज भी यह सत्य प्रमाणित है। सीरिया के राष्ट्रपति इराक के राष्ट्रपति आज भी उदाहरण है कि बाहरी उपलब्धि से जीवन सुरक्षित नहीं है।

लाखों साल पहले महापुरूषों ने जो संसार के लोगो को

संदेश दिया वो आज भी यथावत है। इसलिए अतीत के इतिहास से प्रेरणा लेकर वर्तमान में सुधार कर लेना चाहिऐ। अतीत की भूलों से प्रेरणा लेकर भविष्य को सुरक्षित करें यह प्रत्येक प्रतिनिधि का प्रथम कर्तव्य है सबसे पहले साचेने की बात यह है कि प्रतिशोध के रास्ते पर चलने वाला, चलाने वाला प्रतिनिधि हमारा हितैषी है ?

या जिससे हमारे जीवन को कोई खतरा नहीं है जीवन व्यवस्थित है! और इस प्रकार का जीवन किस सिद्धांत से किस प्रकार की शिक्षा से मिलता है। यह प्राचीन ऋषियों ने खोजा था।

विश्व में कहीं भी खुदाई होती है आर्य सभ्यता मिलती है और हमको पढ़ाया जाता है कि आर्य बाहर से आये बताईये कि विश्व में किस देश का नाम आर्यवृत है ? 'जम्बूदीपे आर्यवर्ते भरतखण्डे' भगवान राम को लाखों वर्ष हो गया है क्या विश्व में ऐसी कोई पुस्तक है जिसमें आर्य शब्द का प्रयोग किया गया हो ? माँ सीत भगवान राम को आर्यपुत्र ही कहती थी। गाँधारी धृतराष्ट्र को 5000 साल पहले आर्यपुत्र ही कहकर सम्बोधित करती थी इतिहास की बाते करने वालों का इतिहास कुल 2000 साल का है क्याकि आर्य और अनार्य दो प्रकार की संस्कृति थी दो प्रकार की विचारधारा थी भौतिकवाद और अध्यात्म उसी को भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा–''द्वो भूतसर्गे .....देव आसुर एव च'' चमड़ी के रंग को आर्य अनार्य नहीं अपितु गुणों के आधार पर आर्य अनार्य होते हैं।

जो परमात्मा की ओर चल रहा है सव ओर से अपने मन को समेटकर उसके हृदय में दैवीय सम्पति आती जायेगी

उस देवता का स्तर ऊपर उठता चला जायेगा इसी प्रकार प्रकृति की तरफ, भोगों की तरफ गहनता से डूबता चला जायेगा वो असुर प्रवृति का कहलायेगा और जो दोनो को साथ लेकर चलता है वह मनुष्य है थोड़ा संसार को समय देना थोड़ा परमात्मा को।

आज कोई भी प्रतिनिधि चाहे वो देश का, समाज का अथवा परिवार का हो कोई भी भविष्य को सुरक्षित छोड़कर विदा होने का दावा नहीं कर सकता है?

और यह रास्ता प्राचीन ऋषियों ने दिया था। बाईबिल 2000 साल, कुरान 1400 बर्ष पुराना, बुद्ध एवं जैन दर्शन 2500 साल पुराना है। इससे पहले किसी का इतिहास नहीं विश्व को दिशा किसने दिया। यहॉ भी भ्रमित किया गया कि विश्व को एक परमात्मा का सिद्धांत देने वाला भारत देवी–देवताओं , भूत–भवानी आदि अनेकों परमपराओं में बट गया। यह किसने दिया ?

मनुष्य के आस पास का वातावरण तथा रहन–सहन उसकी शिक्षा के स्तर को व्यक्त करता है। साथ ही मनुष्य के वर्ताव से भी उसकी शिक्षा एवं जीवन के स्तर का पता चलता है। शिक्षा की सीमा मात्र इतनी नहीं होती जो मनुष्य को उदरपूर्ति के साथ आधुनिक भोग व्यवस्था की तरफ प्रेरित करती है।

शिक्षा तो वह है जो मनुष्य को समस्त सदगुणों से भरकर

परमकल्याण दिलाती है तथा वर्तमान एवं भविष्य को सुरक्षित करती है और इस की शुरूआत गर्भस्थ शिशु से ही हो जाती है। जिसे आप अभिमन्यु, प्रहलाद, अष्टवक्र के जीवन में देख सकते हैं। जैसी शिक्षा होगी वैसे ही मानसिक विचार बनेंगे, वैसा ही समाज का वातावरण होगा। प्राचीन सनातन शिक्षा का निर्माण इसी दृष्टिकोण को रखकर किया गया था। उस शिक्षा की उपेक्षा में परिणाम स्वरूप अनाथ आश्रम एवं वृद्याश्रम की आवश्यक्ता पड़ी। वर्तमान शिक्षा प्रणाली से मानवता का ह्रास हुआ और विश्व में आंतकवाद, अलगावबाद जैसी समस्याओं का निर्माण हुआ। यदि शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को मानवता से दूर रखकर मात्र आधुनिक अविष्कारों द्वारा अत्याधुनिक सुविधाऐं पहुँचाना है तो यह व्यवस्थाकारों की बहुत बड़ी भूल होगी। पूर्व की शिक्षा मूल समस्याओं में समाधान के साथ चरित्र एवं व्यक्तित्व का निर्माण करती थी। प्रतिनिधि प्रजा के हितों का ध्यान रखते थे वह जानते थे कि बाहर की सम्पति कितनी भी हो समय आने पर नष्ट होकर दुख का कारण बनती है।

प्रत्येक माता–पिता अपनी संतान को सुरक्षित एवं व्यवस्थित देखना चाहते हैं, लेकिन माता–पिता के द्वारा न संतान सुरक्षित है और न संतान के द्वारा माता पिता सुरक्षित हैं। कोई भी एक दूसरे के जीवन में आने वाले दुख को नही रोक सकता है, लेकिन प्राचीन सनातन शिक्षा पर अमल करके समाज,

परिवार एवं राष्ट्र सभी को सुरक्षित किया जा सकता है। यदि बचपन से परिवार से लेकर स्कूल, कॉलेज तक यदि यह शिक्षा मिल जाये कि धन से किसी का जीवन सुरक्षित नहीं है। अरबों, खरबों का धन राजाओं के जीवन की रक्षा नहीं कर सका। आज उनके धन का नामोंनिशान नहीं है। ऐसा धन राजाओं के जीवन की रक्षा नहीं कर सका। आज उनके धन का नामों निशान नहीं है। ऐसा धन कितने बार जोड़ा है कितने बार छोड़ा है वर्तमान में जो है उसे भी छोड़कर पता नहीं कहॉ जन्म लेना है। धन तो छूट गया लेकिन गलत तरीके से अथवा किसी को दुख देकर जिन दूषित एवं कलुपित भावनाओं से धन अर्जित किया है। उससे निर्मित संस्कार जीव को अनन्त जन्मों तक दुख देते रहेंगे। क्या ऐसा जानने के बाद कोई देश एवं व्यक्ति के साथ धन, पद एवं सम्मान के लिए किसी गलत तरीके का प्रयोग कर सकता है ? क्या कोई किसी के साथ छल एवं विश्वाघात कर सकता है ?

प्रत्येक नियम एवं शिक्षा प्रणाली भविष्य मे होने वाले दुष्परिणामों को ध्यान में रखकर यदि बनाये जायें तो प्रत्येक राष्ट्र एवं प्रत्येक व्यक्ति सौहार्द एवं हार्दिक प्रेम के साथ विकास के मार्ग में बढ़ सकता है। और अगर हमको भविष्य को सुरक्षित रखना है तो हमें ऐसी तालीम की जरूरत है कि कोई मन से विचलित न हो। कोई किसी के साथ संसार की वस्तु के लिऐ धोखा न कर सके। प्रारम्भिक कक्षा से ही अध्यात्मिक शिक्षा के प्रति जिज्ञासा पैदा की जाये तो निश्चत ही ऐसे संस्कार भावी राष्ट्र के हित में होगा और वह

आध्यात्मिक शिक्षा आर्यों ने दी हिन्दुओं ने दी जिसकी प्रशंसा विदेशी लोगों फाहयान, मेगस्थनीज आदि ने की, विश्व ने स्वीकर किया। आज उसी आध्यात्मिक शिक्षा से संस्कारित होने पर सबको समय पर सही न्याय मिल सकता है। समय पर इलाज हो सकता है आज वर्तमान परिस्थित में ऐसी शिक्षा की अत्यधिक आवश्यकता है जो सबको यह बोध करा सके कि संसार का मनुष्य एक है। सबका ईश्वर एक है, ईश्वर प्राप्ति का मार्ग एक है। सभी महापुरूष एक हैं, दुख का कारण एक है। यह सर्वथा भ्रम फैलाया गया कि मनुष्य का विकास बन्दर से हुआ और हमने बिना तर्क के स्वीकार कर लिया। यह हमारी संस्कृति को विकृत करने का प्रयास किया गया। जबकि हमारे माहपुरूषों ने खोजा ''ईश्वर अंश जीव अविनाशी'' ''अखिल विश्व यह मोर उपाया, सब पर मोर बराबर दाया'' पूरी सृष्टि परमात्मा ने निर्माण की है। सबको जोड़े से उत्पन्न उसने किया अन्यथा इन तर्क करने वालों से पूछो कि पहले अण्डा आया या मुर्गी ? मनु से उत्पन्न होने के कारण सभी मनुज कहलाते हैं मनु को यूरोप वासी आदम कहते हैं इसलिए आदमी कहलाते हैं। (सृष्टि का पहला व्यक्ति) । यदि हमारा विकास बन्दर से हुआ है तो हमारा नाम बन्दर होना चाहिए। दूसरी बात जब सभी बन्दर आदमी बन गये तो बन्दरों को होना ही नही चाहिए । वह परिवर्तन की प्रक्रिया रूक क्यों गयी ? और बाकी

के जीवों की परिवर्तन की प्रक्रिया के बारे मे कुछ सोचा ही नहीं। उनको तो इतिहास विकृत करने से ही मतलब है।

सारी श्रेष्ठता का श्रेय प्राचीन सनातन संस्कृति के ऋषियों ने दिया परमात्मा क ी खोज, गृह उपग्रहों की खोज सब उनकी देन है।

विश्व में वंदित सर्वश्रेष्ठ संस्कृति आर्य संस्कृति, हिन्दू संस्कृति जिस पर चलकर आप एक भयमुक्त वातावरण, भयमुक्त जीवन सोहार्द का जीवन बना सकते हैं। यह संस्कृति फूलों का रास्ता है इसलिए सबने इसका सम्मान किया।

अब आप इन वैज्ञानिकों के काल्पनिक सिद्धांतों पर थोड़ा विचार करें कि किसी वस्तु में जब विस्फोट होता है तो क्या व ह एक व्यवस्थित आकार में बटकर अपनी निर्धारित कक्षा में स्वयं स्थित हो जाती है ?

जबकि सौर मण्डल के सभी ग्रह–उपग्रह एक व्यवस्थित आकार में अपने निर्धारित कक्ष पर गतिमान होकर दिन–रात एवं वर्षो का निर्माण कर मानव जाति को समय का ज्ञान करा रहे हैं।

संसार में इन महत्वपूर्ण 8 बिन्दुओं पर भटकाव है। यदि इन 8 बिन्दुओं को सुलझा लिया जाये तो फिर चाहकर भी मनुष्य अपने को अलग नही कर सकता। सभी एक आदम की संतान, मनु की संतान है। सबका एक ही परमात्मा है लेकिन हमने संपत्ति की तरह परमात्मा का भी बटवारा कर लिया।

अपनी–अपनी जमीन बांट ली। अपना–अपना आसमान बांट लिया, अपना–अपना सममुद्र बांट लिया, अपना–अपना भगवान बांट लिया। यह सबसे बड़ा भ्रम है। जबकि दुनिया की कोई भी वेशभूषा कोई भी भाषा दुनिया को सुरक्षित जीवन नहीं दे सकती। किसी भी प्रकार का रहन–सहन अपना लो आप सुरक्षित नहीं रह सकते। और हम सबका कर्तव्य है हम अपने परिवार के, देश के , समाज के भविष्य को सुरक्षित कर दे यह मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है दुनियां में ऐसा कोई नही जो अपने भविष्य को सुरक्षित होने का दावा कर सके क्योंकि उसके पास ऐसा कोई सिद्धांत नहीं है और सिद्धांत महापुरूषों ने दिये। लेकिन वे सिद्धांत खो गये हमसे।भगवान कृष्ण ने कहा अर्जुन मैने इस ज्ञान को कल्प के आदि में सूर्य से कहा, सूर्य ने मनु से, मनु ने इक्ष्वाकु से कहा, परंपरागत राजऋषियों ने जाना अर्जुन यह योग लुप्त हो गया या और वही योग जो सृष्टि के आरम्भ में मैने कहा आज मैं पुनः कह रहा हूँ वेद तो ब्रह्मा ने बनाये लेकिन ब्रह्मा तो भगवान से बाद में पैदा हुए लेकिन भगवान ने इस ज्ञान को पहले कहा कल्प के आदि में वेदों का सार तत्व है उपनिषद्, उप निवदों का सार तत्व है गीता इसलिए कहा "गीता ब्रह्म विद्या योग शास्त्रे सुपनिषदसु.....

सृष्टि में ईश्वर से बढ़कर कुछ नहीं और वह एक है। और हम सबकी समस्याओं का समाधान उसके पास है। हम कुछ भी प्राप्त कर लें दुनियां में वह नष्ट होना है और हमारे दुःख का कारण बनेगा।

आप संसार में किसी भी समूह में शामिल हो जाओ आपको दुख और आंसू के सिवा कुछ नहीं मिलेगा और ईश्वर पाने के लिए कुछ बदलने की जरूरत नही है केवल अपने मन को बदलने की जरूरत है जो मन में हमारे हटधर्मिता है। उसे बदलने की जरूरत है। अगर हम इनआठ प्रकार के भ्रमों को अपने जीवन से दूर करलें तो चाहकर भी मानवजाति के बीच कभी संघर्ष नहीं होगा। कभी भेद नहीं होगा।

1. धर्म एक है।
2. सबका ईश्वर एक है।
3. सबका इष्ट एक है।
4. मानव जाति एक है।
5. सभी महापुरूष एक हैं।
6. सबका मंत्र एक है।
7. सबके दुख के का कारण एक है संसार का चिंतन, विषयों का चिंतन
8. दुख से छूटने का सृष्टि में एक ही रास्ता है ईश्वर का चिंतन

सभी महापुरूषों ने एक ही बात कही किसी ने भी यह नहीं कहा कि परमात्मा दुख का कारण है। और संसार सुख का कारण है और परमात्मा को मन की चंचलता के द्वारा पाया जा सकता है सभी ने कहा परमात्मा को मन के निर्दोष होने पर परमात्मा की प्राप्ति होती है।

जब तक हमारे मन मे एक भी दोष है तब तक हम परमात्मा को नहीं जान सकते है और न प्राप्त कर सकते हैं।

यदि समय, जीवन एवं धन को सार्थक बनाना है तो विचार विमर्श करके सही मार्ग(सिद्धान्त) खोजना चाहिये, जिससे आपसी सोहार्द के साथ भविष्य को सर्वथा सुरक्षित किया जा सके, अन्यथा प्रत्येक सम्मेलन में करोड़ों खर्च करके हम सभी अपने आपको वहीं बैठा पायेंगें जहां से चलना शुरू किया था। अपने आप को कभी सुरक्षित नहीं कर पायेंगे। बुद्धिजीवियों द्वारा स्वार्थ एवं सत्ता की वेदी पर तब तक निर्दोष लोगों की वलि दी जाती रहेगी, जब तक संसार की उपलब्धि के परिणाम पर विचार करके, मन को निर्दोष बनाने वाला आर्य पथ(योग पथ) जो एक है, उस पर नहीं चला जायेगा। और प्रतिवर्ष, प्रतिमाह, प्रतिदिन सब अपनी–अपनी बुद्धि का प्रदर्शन करते ही रहेंगें।

विश्व में संकीर्णतावश संघर्ष होते ही रहे हैं, घटनाएं घटती ही रहती हैं, प्रत्येक घटना पर महत्वपूर्ण बैठकें भी होती हैं लेकिन लगातार दूरियाँ बढ़ती जा रही हैं मद बढ़ता ही जा रहा है, इसलिए वर्तमान का कर्तव्य है कि वह अतीत की भूलों से तथा नियमों के दुष्परिणामो से प्रेरणा लेकर भविष्य को सुरक्षित करें।

हम सब शरीर से अवश्य पास बैठे दिखाई देते हैं, लेकिन दिल से दूरियाँ हैं। जब तक मनुष्य किसी भी संकीर्णता का शिकार है तब तक दिलों की दूरियाँ कम नहीं होंगी, तब तक असुरक्षित हैं।

खत्म जब दिलों का फासला हो जाएगा,
मैं तुम्हारा हो जाउँगा, तू मेरा हो जायेगा।

यह बैठकें होती आई हैं होती रहेंगी दूरियाँ बढ़ती रहेंगी।

आप उस इलाज को क्या कहेंगे, कि डाक्टरों की टीम इलाज कर रही है, और रोगी की हालत बिगड़ती जा रही है।

समाज सुधारक समाज सुधार में लगे हैं, और समाज की हालत बिगड़ती जा रही है, हर प्रतिनिधि का कर्तव्य है।

कि एक कुशल डाक्टर की तरह समस्याओं के कारणों समाधान देकर, स मस्या को निर्मूल करके अपने पीछे जुड़े हुए समाज को सुरक्षा प्रदान करे। एक कुशल एवं योग्य डाक्टर कभी रोग का इलाज नहीं करता वह रोग के कारण का इलाज करके रोग को निर्मूल कर देता है, जिससे रोग दुबारा नहीं आता है। यदि समस्याओं के कारणों का इलाज हो गया, तो दुबारा समस्या आंएगी ही नहीं।

।। ओम श्री सद्गुरू देव भगवान की जय।।